PDFaid.com
#1 pdf solutions online

इज्जतनगर मण्डल
पर्यटकों के लिए प्रवेश द्वार

इज्जतनगर मण्डल देश के सुदूर स्थानों से प्रमुख तीर्थ एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पर्यटक स्थलों तक पहुँचाने वाले पर्यटकों के

लिए प्रवेश–द्वार है। अपनी पौराणिक व आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कारण उत्तराखण्ड राज्य का क्षेत्र देव भूमि के रूप में सम्पूर्ण विश्व में वंदित है। इज्जतनगर मण्डल इस देव भूमि में पूरे वर्ष आने वाले विदेशी पर्यटकों के रेल परिवहन सेवा की आवश्यकता को पूरा करता है।

इस मण्डल के उत्तर में हिमालय का कुमाऊँ क्षेत्र, उत्तर–पश्चिम में नेपाल तथा दक्षिण में गंगा का मैदानी क्षेत्र है। गंगा, जमुना, रामगंगा,

कोसी और देउहा नदियों द्वारा सेवित इस मण्डल का भू–भाग काफी उपजाऊ है। यह मण्डल उत्तर प्रदेश के 14 जिलों बरेली, बदायूँ, एटा, मथुरा, महामाया नगर (हाथरस), फर्रूखाबाद, कन्नौज, काशीराम नगर, कानपुर, शाहजहाँपुर, लखीमपुर, पीलीभीत, रामपुर, मुरादाबाद एवं उत्तराखंड राज्य के 06 जिलों नैनीताल, उधमसिह नगर, बागेश्वर, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा एवं चम्पावत को सेवित करता है।

मण्डल द्वारा सेवित गंगा के मैदानी क्षेत्र सबसे समृद्व व घनी आबादी वाले क्षेत्र में स्थित हैं। उधमसिंह नगर (रूद्रपुर), काशीपुर व रामनगर के आसपास के क्षेत्र अपनी अपूर्व वन सम्पदा तथा हरित–क्रांति के लिए देश भर में मशहूर हैं।

रूद्रप्रयाग, जोशीमठ एवं बद्रीनाथ जैसे विश्व प्रसिद्व तीर्थ स्थलों के प्रवेश–द्वार होने के साथ–साथ रूद्रप्रयाग होते हुए केदारनाथ, गंगोत्री व जमुनोत्री

जाने का एक वैकल्पिक मार्ग भी यह मण्डल उपलब्ध कराता है। हिन्दू–संस्कृति की आस्था के केन्द्र, भारतवर्ष के चारो कोनों में स्थित पवित्र चार धामों में से एक बद्रीनाथ धाम की देव भूमि मण्डल के ही अर्न्तगत है।

सूफी संतो की कर्मस्थली रहा यह मण्डल अनन्त काल से देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों द्वारा आशीर्वादित रहा है। इसके उत्तर में माँ पूर्णागिरि का पवित्र दरबार, दक्षिण में भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा, पूर्व में ब्रह्मावर्त, जहाँ महर्षि वाल्मिकी ने रामायण भी रचना की तथा पश्चिम

में श्री सोरों जी (भगवान का वाराह अवतार स्थल) स्थित है।

मण्डल को विश्व प्रसिद्व सूफी संत खानखाहे नियाजिया, देश भर के जन–जन में विख्यात ''राधेश्याम रामायण'' के रचियता राधेश्याम रामायणी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन एवं पूर्व उपराष्ट्रपति डा. गोपाल स्वरूप पाठक की जन्मस्थली होने का भी गौरव प्राप्त है। यह मण्डल हजरत निजामुद्दीन और इन्हीं के प्रिय शिष्य व महान सूफी विचारक अमीर–खुसरो, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत, गोविन्दबल्लभ पंत, शैलेष मटियानी, काका हाथरसी आदि की जन्मस्थली एवं कर्मस्थली भी रहा है।

प्रख्यात रूहेला सरदारों की परम्पराओं से परिपूर्ण रूहेलखण्ड में स्थित इस मण्डल की अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी रही है। जैन सम्प्रदाय के जग प्रसिद्व व पूज्यनीय तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ की समाधि–भूमि अहिच्छत्र इस मण्डल के आँवला के निकट रामनगर में स्थित है। सिखों के आराध्य गुरूनानक देव से आशीर्वादित नानकमत्ता इसी मण्डल के अन्तर्गत हैं।

नैनीताल

उत्तर भारत का महत्वपूर्ण स्थल नैनीताल, अपने आसपास की सात प्राकृतिक झीलों तथा नौकायन के लिये प्रसिद्व है। नैनीताल की खोज यूरोपीय व्यापारी व रोजा के विख्यात शिकारी श्री बैरोन द्वारा सन् 1841 में की गयी, जो आस–पास के जंगलों में शिकार करने के लिये आये थे। पौराणिक कथानुसार इसका नामकरण देवी 'नयना' के नाम पर किया गया है। नैनीताल से हिमालय

पर्वत श्रृंखला, विशेष रूप से त्रिशूल (7134 मीटर) तथा नन्दा देवी (8077 मीटर) की चोटियों के सुन्दर दृश्य का भी अवलोकन किया जा सकता है। इस पर्वतीय स्थल पर हजारों पर्यटक अप्रैल से जून तथा अक्टूबर से जनवरी के बीच आते हैं। यह मण्डल के काठगोदाम रेलवे स्टेशन द्वारा सेवित है, जहाँ सड़क मार्ग द्वारा इसकी दूरी मात्र 35 किलोमीटर है।

रानीखेत

नैनीताल से 60 किलोमीटर और काठगोदाम से 83 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रानीखेत एक

मनमोहक पर्वतीय स्थल है। वस्तुतः रानीखेत का शाब्दिक अर्थ ''क्वींस फील्ड'' अर्थात ''रानी का खेत'' है। जनश्रुति है कि किसी रानी ने यहाँ पर शिविर स्थापित किया था और रानीखेत क्लब के आस–पास ही कहीं, स्थायी रूप से बस गयीं तथा इस क्षेत्र को उक्त नाम दिया। रानीखेत से कुछ दूर स्थित चौबटिया में उत्तराखण्ड का प्रसिद्व उद्यान है, जो कि सेब की खेती के लिये प्रसिद्व है।

अल्मोड़ा

काठगोदाम से 91 किलोमीटर और नैनीताल से 67 किलोमीटर पर स्थित अल्मोड़ा की स्थापना कुमायूँ शासक ''चन्द राजकुल'' के राजा कल्यान चन्द द्वारा सन् 1563 में की गयी। सन् 1790 से 1815 तक अल्मोड़ा पर गोरखा राजाओं का शासन था और बाद में यह ब्रिटिश शासन से जुड़ गया। यह रमणीक स्वास्थ्य स्थल (रिसार्ट)

तीन मील लम्बी, घोड़े की काठी के आकार वाले पर्वत पर स्थित है।

जागेश्वर

अल्मोड़ा के पास स्थित बिनसर से 65 किमी दूर जागेश्वर, लालकुआं, शैवमत आस्था का एक प्राचीन केन्द्र व तीर्थस्थल है, जिसे देश के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से आठवाँ ज्योर्तिलिंग माना गया है। यह मन्दिर आठवीं शताब्दी के पूर्ववर्ती चाँद राजवंश की छत्रछाया में रहा है। जागेश्वर में स्थित मुख्य मृत्युजंय ज्योतिर्लिंग के अतिरिक्त धनेश्वर मंदिर एवं वृद्ध

जागेश्वर भी दर्शनीय है।

कौसानी

अल्मोड़ा से उत्तर पश्चिम दिशा में 47 किमी. की दूरी पर स्थित कौसानी, कुमायूं की पहाड़ियों में 1890 मी. की ऊँचाई पर स्थित है। इसके दोनों ओर कोसी एवं गोमती नदियाँ बहती है। यहाँ से न केवल 350 किमी. मे फैली हुई हिमालय की बर्फ से आच्छादित चोटियों की विहंगम एवं मनोहारी छटा

देखने को मिलती हैं, अपितु कत्यूरी घाटी तथा उसके नीचे गोमती नदी का भी अवलोकन किया जा सकता है। प्रसिद्ध नीम करौरी बाबा का आश्रम एवं कोणार्क सूर्य मंदिर को भी ''कटरामल सूर्य मंदिर'' से देखा जा सकता है। यहाँ पर गरम पानी स्रोत के दर्शनीय स्थल भी है। प्रकृति के सुकुमार कवि पं. सुमित्रानन्दन पंत की स्मृति व महात्मा गांधी की अनासक्ति योग की रचना–स्थली ''अनासक्ति आश्रम'' भी यहीं स्थित है। कौसानी की प्राकृतिक छटा व मनोरम दृश्यवली से अभिभूत होकर बापू ने इसे भारत के स्विटजरलैण्ड का नाम दिया।

बद्रीनाथ

बद्रीनाथ धाम में भगवान विष्णु का देवस्थान होने के साथ–साथ पुराणों में वर्णित ''नर और नारायण'' का महान पावन आश्रम भी स्थित है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार जब तक बद्रीनाथ की यात्रा न की जाए तब तक चारों धामों की तीर्थ यात्रा पूरी नहीं होती है। यह मंदिर भारतवर्ष में चार अत्यंत पवित्र स्थानों में से एक है और गंगा की प्रमुख उप नदी अलकनन्दा पर स्थित है।

केदारनाथ

यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। श्री केदारनाथ का मन्दिर 3581 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

जिम कार्बेट राष्ट्रीय पार्क

यह वन्य प्राणी अभ्यारण, मण्डल के निकटतम् रेलवे स्टेशन रामनगर से मात्र 31 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। कुमायूँ पहाड़ियों की तलहटी में 530 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुये इस पार्क का नाम विश्व प्रसिद्व शिकारी एवं वन्य जीव प्रेमी और ''मैनईटर्स आफ कुमायूँ'' के लेखक जिम कार्बेट की स्मृति में रखा गया है। रेलवे के लिये यह एक गर्व की बात है कि जिम कार्बेट एक रेल कर्मी भी थे तथा मोकामाघाट फेरी में कार्य करते थे।

जिम कार्बेट पार्क, वन्यजीवों की विभिन्न प्रजातियों का आश्रय–स्थल है और अपनी विशिष्ट प्राकृतिक

छटा के कारण एक बड़ा पर्यटक आकर्षण भी है। यहाँ पर वन्य जीवों तथा वनौषधियों संबंधी शोधकार्य हेतु देश–विदेश के वैज्ञानिक भी आते हैं। पार्क के वन्य जीवों में विभिन्न प्रकार की वन्य प्रजातियाँ शामिल हैं। यहाँ जंगली हाथी, बाघ, तेन्दुआ, चीते, जंगली कुत्ते, लकड़बग्घे, काले भालू, चीतल, सॉभर, हाग–डीयर, काकॅर, जंगली बिल्ली, कृष्णसार मृग, हिरन, शूकर आदि जानवर स्वच्छंद विचरण करते हैं। रामगंगा नदी में बसन्त एवं शरद ऋतु को मौसम में मछली का शिकार का उत्तम अवसर रहता है।

मथुरा

मथुरा भगवान श्री कृष्ण का जन्म स्थान होने के साथ ही प्राचीन हिन्दू एवं बौद्व–संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र भी है। यहाँ का ''द्वारिकाधीश मन्दिर'' भगवान श्री कृष्ण का अति प्राचीन एवं प्रसिद्व मन्दिर है। भगवान श्री कृष्ण जन्म स्थल पर भी एक भव्य

मन्दिर है, जो दर्शनीय होने के साथ–साथ आस्था का केन्द्र भी है।